भजन

अरिहन्त देव स्वामी शरण तेरी आये-२।
दुख से है व्याकुल, कर्म के सताये-२॥ अरिहन्त॥
निज कर्म काट करके आप सिद्ध हो गये हो।
तारण तरण तुम्हीं हो, जिनवाणी बताये-२॥ अरिहन्त॥
शक्ति है तुझमें ऐसी, कर्म काटने की।
छोड़कर तुम्हें हम सब किस की शरण जायें-२॥ अरिहन्त॥
मझधार में फसीं हैं प्रभु जी नाव मेरी।
भव पार तुम लगा दो, आस लेके आये-२॥ अरिहन्त॥
तारा हैं तुमने उनको जिसने भी पुकारा।
हम भी पुकारते हैं तुमको लौ लगाये-२॥ अरिहन्त॥